बिन्द्रा जी! अभी आपसे बहुत कुछ सीखना है

क्रिकेट और उससे जुड़ी चीजो के सच्चे प्रेमी बिंद्रा जी जिन्हे शायद मैं अपना सबसे अच्छा दोस्त, गाइड और क्रिकेट प्रशासक कह सकता हूं, ने आखिरकार रिटायरमेंट का फैसला ले लिया। 36 साल तक पंजाब क्रिकेट संघ (पीसीए), बीसीसीआई एंव भारतीय क्रिकेट और आईसीसी व विश्व क्रिकेट में योगदान देने वाले इंद्रजीत सिंह बिंद्रा इस जेंटलमैन गेम के लिये एक स्थायी विरासत पीछे छोड़ गये हैं।

एक चतुर क्रिकेट प्रशासक, स्वतंत्र और निडर व्यक्ति और इससे उपर एक अद्भुत इंसान – यह मेरी खुशी नहीं बल्कि मेरा सौभाग्य था कि मुझे बिंद्रा जी के साथ मिलकर काम करने का अवसर मिला। क्रिकेट प्रशासन के तौर पर मेरे दोस्त हमेशा विश्वसनीय और मेंटर की भूमिका में नजर आये, बिंद्रा जी ने मुझे क्रिकेट से जुड़ी कई जरुरी जानकारियां दी जिससे मुझे इस खेल को समझने में काफी मदद मिली। अपने प्रिय खेल में आये किसी भी रुकावट को उन्होने चुपचाप बैठकर कभी नहीं देखा। गलती होने पर बिंद्रा जी बीसीसीआई की भी मुखालफत किया करते थें लेकिन मैने कभी उन्हे ऐसे कार्य से पीछे हटते नहीं देखा जिसपर उन्हे पूरा विश्वास हो।

मेरे पास बिंद्रा जी के साथ मोहाली के पीसीए हॉल में टहलने की इतनी ढ़ेर सारी यादें हैं कि मै उनके इस खेल से दूर होने के बारे में सोच भी नही सकता। इससे भी महत्वपूर्ण बात ये है कि मुझे पीसीए और भारतीय क्रिकेट को उनके मार्गदर्शन में और ताकतवर होते देखने का शानदार मौका मिला। निसंदेह पीसीए भारत के बेहतरीन क्रिकेट स्टेडियम में से एक है जिसकी तुलना दुनिया के सबसे अच्छे स्टेडियमों से की जा सकती है। 2011 के विश्व कप में बिंद्रा जी के प्रिय पीसीए स्टेडियम में आयोजित भारत बनाम पाकिस्तान का सेमीफाइनल मैच बिंद्रा जी के शानदार कैरियर का अतुलनीय क्षण था।

पीसीए के इन महत्वपूर्ण तथ्यों के अलावा बिंद्रा जी के साथ कई उपलब्धियां जुड़ी हुई हैं। वह हमारे प्रिय खेल के उत्थान और क्रिकेटरों के लाभ के लिये बगैर थके काम करने में यकीन रखते थे। मै बिंद्रा जी को खेल के उस अग्रदूत के रुप में जानता हूं खेल का सही मूल्य को समझा और सही ढंग से उसकी मार्केटिंग करने

में सफल रहे जिससे उसकी असली क्षमता का पता चल सका। इसके अलावा वह भारतीय क्रिकेट में कुछ चंद प्रशासकों में शुमार हैं जिन्होने भारतीय क्रिकेट टेलीविजन बाजार को खोलने के लाभ को समझा। मैंने जब बीसीसीआई की दुनिया में प्रवेश किया था तब मुझे बेहद करीब से इस क्षेत्र में उनके साथ काम करने का अवसर मिला था।

मुझे लगता है बिंद्रा जी के साथ हुई मेरी मुलाकात अभी कल की ही बात है आश्चर्यजनक रूप से खेल प्रशासन में मेरा कैरियर उनके मेज की दूसरी तरफ बैठ कर शुरु हुआ। मैं भारत में स्पोर्टस पे चौनलों के वितरण को एक व्यवसाय बनाने की कोशिश कर रहा था। और मेरे ख्याल से बिंद्रा जी ही शायद उस वक्त एकमात्र व्यक्ति थे जिन्होने समझ लिया था कि खेल के इस व्यापार में श्सभी धर्मों और जातियोंश को बांधने की क्षमता है, इसीलिय उन्होने भारत में ईएसपीएन और फिर टेन स्पोर्ट्स के माध्यम से टेलीवाइज्ड क्रिकेट लाने में मेरी मदद की।

मुझे लगता है कि बिंद्रा जी उस वक्त ही समझ गये थे की लाइव स्पोर्टस उन चुनिंदा चीजों में से एक है जिसके लिये भारतीय टेलीविजन दर्शक जल्द ही परिपक्व हो जायेंगे और भुगतान करने के लिए सहमत होंगे। बिंद्रा जी और शायद श्री डालमिया ही केवल वो दो लोग थे जिन्होने दो दशक पहले ही प्रसारण अधिकार के मूल्य को बखूबी समझ लिया था।

मुझे अच्छी तरह याद है कि जब मैं ईएसपीएन के माध्यम से इंग्लैंड और वेल्स क्रिकेट बोर्ड, बीसीसीआई, क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड क्रिकेट, वेस्ट इंडीज और श्रीलंका के प्रसारण अधिकार को खरीदने गया था उसके बाद बिंद्रा जी ने मुझसे कहा कि मैं भारतीय क्रिकेट की मदद कर सकता हूं और सिस्टम में सुधार लाने का सबसे अच्छा तरीका यह है की इसमें शामिल हुआ जाये और भीतर से इसे सुधारने पर काम किया जाये।

और सही मायनों में तब से ही भारतीय क्रिकेट के साथ मेरा असली वास्ता शुरू हुआ। जब मैने इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) के बारे में अपने विजन को बीसीसीआई और दुनिया को बताया तब भी वह मेरे साथ थे। दिन या रात किसी भी समय उनका मार्गदर्शन मुझसे केवल एक फोन कॉल दूर हुआ करता था। इसके अलावा आईसीसी के प्रधान सलाहकार की एक अन्य भूमिका को भी वह बेहद पसंद

किया करते थे जिसके तहत दुनिया के सबसे बड़े बाजारों यानि चीन और संयुक्त राज्य अमेरिका में खेल को बढ़ावा देने के लिए उन्होने यात्रा की थी।

इसीलिये, आज ये लिखते समय मेरे मन में उस स्थायी विरासत का ख्याल आ रहा है जो इस विराट व्यक्तित्व ने क्रिकेट के लिए किये गये अपने कार्यो के माध्यम से बनाई है।

इस कमी से निश्चित तौर पर भारतीय क्रिकेट को बहुत नुकसान होगा क्योंकी एक क्रिकेट प्रशासक के रूप उनकी उपलब्धिया असाधारण है जिसकी भरपाई बेहद मुश्किल है। मैं उनकी कुशलता की कामना करता हूं और जानता हूं की वह सहायता और मार्गदर्शन के लिये उपलब्ध रहेंगे ना सिर्फ मेरे लिये बल्कि हर उस व्यक्ति के लिये जो भारतीय क्रिकेट प्रणाली में सुधार चाहता है।

बीसीसीआई संकट पर मेरे विचारों को मेरे ट्विटर खाते /**@lalitkmodi** के माध्यम से फॉलो करें।